International Journal of Applied Research 2017; 3(5): 846-849

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(5): 846-849
www.allresearchjournal.com
Received: 15-05-2017
Accepted: 23-05-2017

डॉ० वन्दना रूहेला
संस्कृत-विभाग, जे०वी० जैन डिग्री, कॉलेज, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ० वन्दना रूहेला
संस्कृत-विभाग, जे०वी० जैन डिग्री, कॉलेज, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

श्री परमानन्द शास्त्री के 'जनविजयम्' में जनता

डॉ० वन्दना रूहेला

DOI: https://doi.org/10.22271/allresearch.2017.v3.i5l.10056

सारांश
किसी भी राष्ट्र के लोकतन्त्र में अन्यायपूर्ण शासन को उखाड़ फेंकने की सम्पूर्ण शक्ति जनता में निहित होती है। शासक की 'अधिनायकवादी-प्रवृत्ति' जनता को कदापि स्वीकार नहीं होती है। 25 जून 1975 का काल भारत में तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा जनता पर बलपूर्वक आरोपित आपातकाल का समय था। श्रीमती इन्दिरा गांधी देश में चल रहे विभिन्न छात्र आंदोलनों जैसे – गुजरात नवनिर्माण आंदोलन, जे०पी० आंदोलन, रेलवे हडताल को इसका मुख्य कारण माना था[1] परन्तु जनता लोकतंत्र के मर्म को भलीभांति पहचानती है। अत एव निर्वाचन प्रचार के समय सत्तारूढ़ और विपक्ष दोनों ही दलों के तर्कों को सुनकर मनन करती है। जनता सदैव मतदान के प्रति जागरूक होती है वह सभी पक्षों पर विचारपूर्वक ही मत देने के विषय में निर्णय करती है। प्रस्तुत शोधपत्र का विषय भी यही है। कविवर परमानन्द शास्त्री का 'जनविजयम्' भारतीय जनता की शक्ति को केन्द्र में रखकर रचा गया महाकाव्य है। राष्ट्र में लगे आपातकाल की भयावह स्थिति पर भारतीय जनमानस ने किस प्रकार प्रतिक्रिया दी, इसी विषय को प्रस्तुत शोधपत्र में दर्शाया गया है।

कूटशब्दः जनविजयम्, अन्यायपूर्ण शासन, सम्पूर्ण शक्ति जनता, गुजरात नवनिर्माण आंदोलन

प्रस्तावना
गौड़वंशीय 'श्री हरवंश लाल' तथा माता 'श्रीमती चमेली देवी' के सुपुत्र 'श्री परमानन्द शास्त्री' का संस्कृत कवियों में विशिष्ट स्थान है। कवि ने अपने महाकाव्य 'जनविजयम्' में अन्तिम पृष्ठ पर संक्षेप में अपने कुल तथा अपना परिचय दिया है। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य करते हुये आपने संस्कृत साहित्य निधि में अपने ग्रन्थ-रत्नों से श्रीवृद्धि की है। कविवर ने जहां अपनी नवनवोमेषशालिनी मेधा से नूतन ग्रन्थों की रचना की वहीं प्रखर और प्रौढ़ विवेचनात्मक साहित्य का भी सृजन किया है। संस्कृत तथा हिन्दी दोनों ही भाषाओं में कविवर ने प्रभूत साहित्य-रचना की है। 'गन्धदूतम्, 'जनविजयम्', सूर्यारुण्यशतकम्' 'चीरहरणम्' 'भूतदूत, परिदेवनम्, वानरसन्देशः, भारतशतकम्, विप्रश्निका, कौन्तेयम्, संतोषकल्पतरुः, परमानन्द-सूक्तिशतकम्, स्वरभारती, आनन्दगीतिका, सरसैय्यद अहमदखां चरितम्, अन्योक्तितूणीरम्, मन्थनम्, आनन्दगालिबीयम्, अपराजिता, मत्स्यगन्धा, सौवर्णीवाचालता, संस्कृतगलज्ज़लिकाकादम्बिनी, मन्दिरप्रदीपः, शकुन्तला, सौरभसन्देशः, ब्रजभारती' आदि कवि की संस्कृत रचनाएं हैं तथा गाथा सप्तशती, बिहारी और उनका साहित्य, संस्कृत गीतिकाव्य का विकास, धोयी और उनका पवनदूत कवि के अनूदित तथा विवेचनात्मक ग्रन्थ हैं।[2]

कविवर डॉ० परमानन्द शास्त्री द्वारा रचित महाकाव्य 'जनविजयम्' श्रीमती इन्दिरा गांधी पर रचित रचनाओं में विलक्षण रचना हैं। वस्तुतः प्रधानमंत्री के रुप में श्रीमती इन्दिरा गांधी तथा उनके शासन का कथावस्तु में महत्वपूर्ण स्थान होते हुये भी यहाँ 'जनता' अर्थात् 'जनशक्ति' ही नेता के रूप में उपस्थित है। जनता से तात्पर्य यहाँ जनता पार्टी नहीं है, अपितु वह असीम जनशक्ति, है जो कि अनुचित कार्य करने वाले शासक को पद से वंचित कर देती है। उसे बोध कराती है कि जनशक्ति निरकुंश शासक को मनमानी नहीं करने देती है।

आपातकाल की राजनैतिक परिस्थितिवश जनमानस की प्रतिक्रिया ही मानो कवि के काव्य में प्रस्फुटित हुई है। काव्य कलेवर की दृष्टि से यह महाकाव्य की कोटि में निबन्धित है। 'जनविजयम्' में कथानक को पन्द्रह सर्गों में विस्तार दिया गया है। महाकाव्य में नगर वर्णन ऋतुवर्णन, सन्ध्या, प्रभातादि वर्णन भी प्राप्त होता है।

इस प्राचीन परिपाटी का पालन करते हुए भी कवि ने उपर्युक्त घटना प्रधान (आपातकाल) काव्य में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी का जनता के हाथों पराभव दर्शित करके भारतीय जनता का ही नेतृ पद पर अभिषेक किया है।

'जनविजयम्' महाकाव्य में कवि ने चरित्र चित्रण के सन्दर्भों में सत्य और तथ्य के वर्णन का लक्ष्य रखा है। कवि ने यहाँ 'श्रीमती इन्दिरा गांधी, पं० जवाहरलाल नेहरू, श्री लालबहादुर शास्त्री, संजय गांधी, लोकनायक जयप्रकाश नारायण' आदि के चरित्र मुख्य रूप से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किए है। इसके अतिरिक्त गौण रूप में कवि ने 'पृथ्वीराज चौहान, महाराणा प्रताप, शिवाजी, गुरुतेगबहादुर, अजीत, जोरावर, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, महात्मा गांधी, श्रीराम, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, भगतसिंह' आदि महापुरुषों तथा 'मुहम्मद अली जिन्ना, याह्या' और 'भुट्टो' आदि नकारात्मक चरित्रों को भी अपनी लेखनी से स्पर्श किया है।

चरित्रचित्रण के सन्दर्भ में कवि की विचार-सरणी नितान्त मौलिकता-सम्पन्न है। 'जनविजयम्' के नेता के रूप में कवि ने भारतीय जनता को प्रतिष्ठित किया है। भारतीय जनता के परिप्रेक्ष्य में ही सम्पूर्ण काव्य रचित है। यह कहा जा सकता है कि समस्त वर्णन जनता के सापेक्ष वर्णित है। कवि के 'समर्पणम्' और 'आशंसनम्' शीर्षक से भी जनता की ही नेतृ-पद पर प्रतिष्ठा का भाव स्पष्ट होता है-

यस्याद्वितीयेन पदक्रमेण स दानवापातबलिर्निबद्धः।
नवावताराय जनाय तस्मै समर्प्यत तद्विजयप्रशस्तिः।।[3]

तथा

राष्ट्रस्य जीयाज्जन एक आत्मा प्रभुत्वसत्ता च जनस्य जीयात्।
अन्यायमुज्जासयितुं च जीयात् क्रान्ति स्फुलिङ्ग-प्रतिभा-विवेकः॥[4]

'जनविजयम्' में नायक भारतीय जनसाधारण है जिसने आततायी अन्यायपूर्ण शासन को प्रजातंत्र के अमोघ अस्त्र मतशक्ति से पराजित किया है। जनता के प्रतिनिधि के रूप में कवि ने स्पष्ट कहा है कि राज्य मेरा है और मैं ही राष्ट्र हूँ, और प्रभुत्वशक्ति मुझ में ही सन्निविष्ट है और सरकारें बनाना, धारण करना, और नष्ट करना मेरा कार्य है। अतः स्पष्ट है कि आलोच्य काव्य की नेता भारतीय जनता है।

'जनविजयम्' काव्य में भारतीय जनता लोकतंत्र की प्रबुद्ध जनता के रूप में वर्णित है। वह लोकतंत्र के प्रति पूर्ण आस्थावान है। इसीलिए शासक की 'अधिनायकवादी-प्रवृत्ति' से जनता पर किया गया अत्याचारपूर्ण शासन उसे स्वीकार नहीं है।

अन्याय और अत्याचार का विरोध करने वाली भारतीय जनता शासन के प्रति अपने विरोध को पूर्णतः प्रकट करती है। भ्रष्टाचार, वृत्तिहीनता, भातृज्यवाद, उत्कोच, चमचागिरी आदि शासन के अवगुणों के विरोध में जनता आन्दोलन का मार्ग अपनाती है, क्योंकि-

प्रश्लेषहेतुर्नियतं प्रजानां नेतुश्च मध्ये ननु देश एव।
विस्मृत्य देशं स्वहितं विलीनस्तिष्ठेत्स्व नेता हृदये जनस्य॥[5]

तत्कालीन शासन व्यवस्था के विरोध में स्थान स्थान पर जनान्दोलन आरम्भ हो जाते हैं। जनता की शक्ति देखकर शासक पद पर आरुढ़ श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा गुजरात राज्य में निर्वाचन का आदेश दे दिया गया। वहाँ श्रीमती इन्दिरा गांधी की पराजय हुई।

जनता की भावना का सम्मान न करते हुए श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा पद-त्याग के स्थान पर स्वयं सत्ता का दुरुपयोग कर देश में आपातकाल की स्थिति लगा दी गयी। यहाँ भी कवि ने भारतीय जनता की अन्याय के विरोध के प्रति कष्टों को सहन करने की शक्ति का उल्लेख किया है।

आपातकाल के समय जनता ने सर्वकार के भीषण अत्याचारों को सहन किया किन्तु लोकतन्त्र में अपनी आस्था का त्याग नहीं किया। जैसे-जैसे दमन-चक्र चला आन्दोलन और भी तीव्र होता गया। भारतीय ग्राम्य जनता लोकतंत्र के अर्थ को भी पहचानती है और

राजनीति की स्वार्थ-वृत्ति को भीभलीभांति समझती है। वसन्त का वर्णन करते हुए ग्राम्य किसान इसी भाव को व्यक्त करता है -

यथा मतार्थं बहुनेतृलोकः पात्रेषु संसक्तरसेषु तद्वत।
सवेदिकानां मधुमक्षिकाणां भ्रमत्यजस्रं मधुलुब्ध ओघ॥[6]

वसन्त के वर्णन में की गयी इस कल्पना से भारतीय ग्राम्य जनता को लोकतंत्र सिद्धान्तों का ज्ञान होना सिद्ध होता है। भारतीय ग्राम्य जनता निर्वाचन प्रचार के समय सत्तारूढ़ और विपक्ष दोनों ही दलों के तर्कों को सुनकर चिन्तन करती है।

भारतीय जनता मतदान के प्रति जागरूक है वह सभी पक्षों पर विचारपूर्वक ही मत देने के विषय में निर्णय करती है। अत्याचारी सत्ता के प्रति क्रोध से युक्त जन रौद्र रूप धारण करके कांग्रेस जनों के प्रति विरोध प्रकट करते है:-

उत्तोल्य यष्टिं रुधिराक्तदृष्टिः कश्चिद् बभाषे ननु तिष्ठ तिष्ठ।
'गृहाण दास्ये' मतमेहि तावत् 'कल्याणभूतं त्वरितं प्रदानम्'॥[7]

जनता के कोप को देखते हुए सर्वकार द्वारा 'भू-शुल्क' और 'विद्युत-कर' में राहत और कृषि हेतु 'सिंचन-व्यवस्था' आदि अनेक सुविधाप्रदायक कार्य किये गये किन्तु भारतीय जनता विवेकी है। वह इन सुविधाओं को देखते हुए सर्वकार के इस कार्य को निर्वाचन में स्वलाभ हित किया गया प्रयोग मानती है। मतदान के समय को भारतीय जनता पर्व की भांति मानती है। जनता में उत्साह व्याप्त है। लोग परम्परागत वेशभूषा में सज्जित होकर मतदान हेतु जाते हैं। जनता अपने मताधिकार के प्रति जागरूक है। यही कारण है कि वृद्ध और अत्यन्त रोगी जन भी मतदान हेतु निर्वाचन केन्द्रों पर उपस्थित होते हैं। भारतीय जनता की इसी जागरूकता के कारण 'अधिनायकवादी-प्रवृत्ति' वाली सत्ता पराजित होती है। भारतीय जनता की लोकतंत्र में स्थित आस्था के कारण कवि ने भारतीय जनता को नमन के योग्य बताया है-

यत्र कुत्रापि देशेस्युरीदृशाः कतिचिज्जनाः।
प्रजातंत्रमपास्यान्यत् किं तन्त्रं तत्र सिद्धयति ?[8]

भारतीय जनता के जनतन्त्रावबोध की समस्त विश्व में प्रशंसा होती है -

क्रान्तिर्विना शोणितबिन्दुपातम् अशिक्षितानां जनतंत्रबोधः।
अभूतपूर्वो विजयो जनस्य लोकस्य जातोऽद्भुतविस्मयाय॥[9]

विदेशी पत्रों में भी भारतीय जनता की प्रशंसा में अनेक लेख लिखे गये। पंचदश सर्ग में कवि ने जनता के प्रतिनिधि के रूप में जनता के विचार व्यक्त किये है। वस्तुतः यह जनभावना ही कवि के महाकाव्य के रूप में मुखरित हुई है। भारतीय जनता नेताओं से सदाचरण युक्त राजनीति की अपेक्षा करती है, जिससे समाज का कल्याण हो जनता के द्वारा यहाँ स्पष्ट किया गया कि राजनीतिज्ञों को जनता का सम्मान करना चाहिये-

प्रागेव जानीथ च भारतीय जनार्दन मां जनमात्थ चैवम्।
प्रायश्चितं पातकदण्डमेतत् स्वीकृत्य मौनं कुरुत प्रहर्षाः ॥[10]

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि भारतीय जनता अपनी शक्ति को पहचानती है भारतीय जनता राजनीतिज्ञों को अपनी इसी शक्ति के विषय में सचेत करती है कि प्रजा के धैर्य की भी सीमा होती है और क्रान्ति सदैव ही रक्तहीन नहीं होती, क्योंकि शीतल जल को भी यदि मथा जाये तो उससे भी विद्युत की उदग्रधारा उत्पन्न होती है।[11]

भारतीय जनता एक सीमा तक सर्वसहा है। वह 'क्षमा' जानती है और 'दण्डनीति' भी जानती है और इसका प्रमाण है कि जनतान्त्रिक मूल्यों से भ्रष्ट सत्ता को जनता द्वारा पराजित कर बहिष्कृत कर दिया गया-

अलं बहुक्तेन च दृष्टमेव प्रत्यक्षसिद्धे किमिह प्रमाणम्।
सर्वंसहो भारतभूजनोऽस्मि, शमं क्षमा दण्डविधिं च जाने ॥[12]

इस प्रकार सिद्ध होता है कि काव्य के नेता के रूप में वर्णित भारतीय जनता का चरित्र उदात्त है। वह 'शक्ति-सम्पन्न, विवेकी' और 'जागरूक' है तथा जनतान्त्रिक मूल्यों से भ्रष्ट-सत्ता को दण्डित करके अपनी प्रबल शक्ति का भी उद्घोष करती है । अतः कहा जा सकता है कि कवि ने नेतृ पद पर प्रतिष्ठित जनता के चरित्र को अनुकरणीय रूप में प्रस्तुत किया है।

संदर्भ

1. https://hindi.oneindia.com/news/india/history-of-emergency-25-june-1975-four-major-reason-for-indira-gandhi-declared-emergency-in-india/articlecontent-pf354757-625281.html

2. परमानन्दशास्त्रिरचनावलिः, डॉ० सत्यप्रकाश शर्मा एवं प्रो० परमेश्वरनारायण शास्त्री, राष्ट्रियसंस्कृत संस्थानं नवदेहली,पृष्ठ 12-14
3. जनविजयम्, 'समर्पणम्', प्रारम्भिक पृष्ठ
4. जनविजयम्, 'आशंसनम्', प्रारम्भिक पृष्ठ
5. जनविजयम् – 7/33
6. जनविजयम् – 11/22
7. जनविजयम् – 11/48
8. जनविजयम् – 12/38
9. जनविजयम् – 13/37
10. जनविजयम् – 15/38
11. जनविजयम् – 15/56
12. जनविजयम् – 15/60